बेंजामिन फ्रैंकलिन

एक जीवन चरित्र

योना ज़ेल्डिस मक्डॉनो   चित्र : मल्का ज़ेल्डिस

बेंजामिन फ्रैंकलिन

एक जीवन चरित्र

बेंजामिन फ्रैंकलिन

एक जीवन चरित्र

दो व्यक्ति तेज़ी से सड़क पर चले जा रहे थे। उनकी आँखें आसमान में घुमड़ते तूफान और उसके बादलों पर टिकी हुई थीं। एक के हाथ में कुछ अजीब तरह की पतंग थी, जिसके ऊपरी सिरे पर धातु का एक तार निकला हुआ था, और पतंग की डोर में एक चाभी लटकी हुई थी। वे दोनों एक मैदान में पहुंचे, और तभी बारिश शुरू हो गई, और ज़ोर से बिजली कड़कने लगी। उनमें से छोटा व्यक्ति पतंग को लेकर मैदान के दूसरे छोर की ओर दौड़ा, और पतंग आसमान से बातें करने लगी। बड़े ने पतंग की डोर पकड़ी हुई थी। पानी से तर-बतर, दोनों एक छप्पर की तरफ बढ़े, और उसके नीचे इंतज़ार करने लगे। थोड़ी देर तक कुछ नहीं हुआ। दोनों निराश से एक दूसरे की ओर देखने लगे। तभी पतंग की डोर पकड़े व्यक्ति ने देखा की डोर से निकले कुछ रेशे तन कर खड़े हो गए थे, मानो उनमें जान आ गई हो। वह अपनी उंगली को चाभी के पास ले गया, और उसे एक झटका सा महसूस हुआ, बिजली का झटका। जैसी कि उसे उम्मीद थी, बिजली की एक चिंगारी गीली डोर के सहारे बादलों से धातु की चाभी तक आ पहुंची थी, जिससे चाभी विद्युतीकृत हो गई थी। बिजली का जो हल्का झटका उसने महसूस किया था, वह इस बात का प्रमाण था। उस आदमी का नाम था बेंजामिन फ्रैंकलिन, और उसने अपने बेटे विलियम की मदद से यह साबित कर दिया था कि बादलों के बीच चमकने वाली रोशनी वास्तव में बिजली यानि विद्युत ही थी।

सन १७०६ के एक ठण्ड से ठिठुरते दिन बेंजामिन फ्रैंकलिन का जन्म हुआ था। उसके पिता जोसियह बॉस्टन शहर में साबुन और मोमबत्तियां बनाया करते थे, और मां अबिआह अपने बच्चों की देखभाल करती थीं, जो कि दो-चार नहीं, पूरे तेरह थे। वे सभी चार कमरों के एक छोटे से घर में रहते थे। बेंजामिन (बेन) ने बहुत छोटी उम्र में ही पढ़ना सीख लिया था, और अक्सर जाड़ों की दोपहरी में कोई किताब थामे अपने बिस्तरे में दुबका रहता था। उसके माता-पिता ज्यादा पैसे वाले तो थे नहीं, इसलिए उनके पास थोड़ी ही किताबें थीं। लेकिन बेन को इससे कोई शिकायत नहीं थी। वह उन्हीं किताबों को बार-बार पढता रहता था, हालाँकि वे अक्सर मुश्किल शब्दों से भरी होतीं, और उनमें तस्वीरें भी गिनी चुनी ही होती थीं।

जब बेन सात बरस का था, उसने एक कविता लिखी। यह इतनी अप्रत्याशित घटना थी, कि उसके माता-पिता ने उसे स्कूल भेजने का निश्चय किया। उन दिनों बहुत कम बच्चे स्कूल जाते थे, इसलिए माता पिता द्वारा स्कूल भेजा जाना किसी भी बच्चे के लिए बड़े गौरव की बात थी। बेन पढ़ने और लिखने में बहुत होशियार था, लेकिन गणित में बहुत कमज़ोर। और उसे समझ नहीं आता था कि उसे लैटिन जैसी प्राचीन भाषा क्यों पढाई जा रही है, जिसे अब कोई बोलता तक नहीं था। जैसे उसकी उम्र बढ़ी, वह घुंघराले बालों और चमकदार आखों वाला हृष्ट पुष्ट सुन्दर किशोर बन गया। उसे तैराकी और पतंग उड़ाना बहुत पसंद था। उसकी पहली ईजाद यह थी कि वह तैरते समय अपने हाथों और पैरों में लकड़ी के फट्टे बांध लेता था, जिससे कि वह और तेज़ी से तैर सके!

दो साल बाद बेन को स्कूल छोड़ना पड़ा, क्योंकि उसके माता पिता को अपनी दुकान चलाने में उसकी मदद की ज़रूरत थी। बेन को गणित से भी ज़्यादा बुरी लगती थी भेड़ और गायों की उस चर्बी की दुर्गन्ध जिसका इस्तेमाल मोमबत्ती बनाने में होता था। इसलिए उसके पिता ने उसके लिए कोई और काम खोजना शुरू किया। बढ़ई का काम, ईंटें चिनने का काम, या पीतल का सामान बनाना, कुछ भी उसे अच्छा नहीं लगा। आखिर एक दिन जोसियह को एक बहुत अच्छा विचार आया। उसने सोचा, क्योंकि बेन को किताबें इतनी पसंद है, उसे किताबें बनाने का काम ही क्यों न सिखाया जाये।

बेन के बड़े भाई जेम्स की बॉस्टन में किताबें छापने की दुकान थी। बेन को उसी के पास प्रशिक्षण के लिए भेज दिया गया। वैसे बेन अपने भाई के लिए काम करना तो नहीं चाहता था, लेकिन कम-से-कम यह ईंटें चिनने के काम से तो अच्छा था। इस प्रकार १७१८ में बारह साल की उम्र में छपाई का काम सीखने के साथ बेन के व्यावसायिक जीवन की शुरुआत हुई।
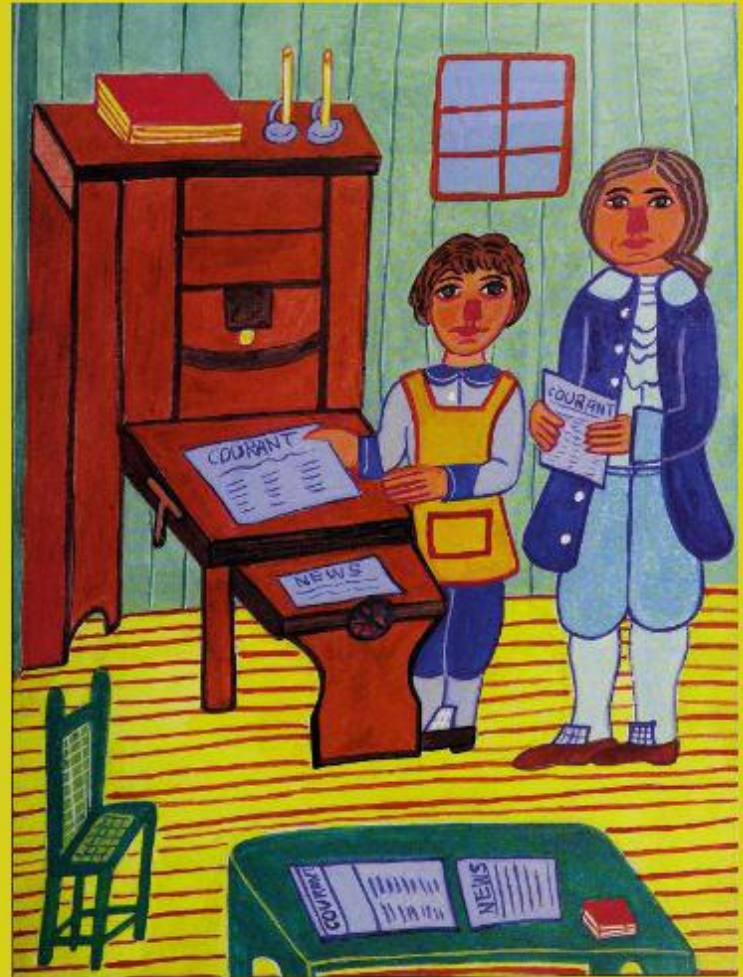
जेम्स की दुकान में बेन ने धातु के छोटे छोटे अक्षरों को विशेष प्रकार के फ्रेम में लगा कर छपाई का साँचा बनाना सीखा, जिससे कि वे शब्द कागज़ पर छापे जा सकें। जल्दी ही वह कहानियों और गानों की छोटी छोटी किताबें छापने लगा। इसी बीच बेन ने लेखन पर भी अपना हाथ आज़माया। उसने कई प्रसिद्ध घटनाओं पर कविताएं लिखीं। इनमें से एक में किसी व्यक्ति के नदी में डूबने का विवरण था, और एक में काली दाढ़ी वाले एक समुद्री डाकू का। जेम्स को बेन की कविताएं अच्छी लगीं और इसलिए उसने उन्हें प्रकाशित भी किया। जल्दी ही बॉस्टन भर में कविता लिखने वाले इस बालक की चर्चा होने लगी। सन १७२१ में जेम्स ने एक अख़बार, न्यू इंग्लैंड कुरैंट, का प्रकाशन शुरू किया। बेन इसकी प्रतियां छापता और उन्हें ग्राहकों तक पहुंचाता। उसे यह काम तो अच्छा लगता था, लेकिन जेम्स उसे पसंद नहीं था, क्योंकि वह उसके साथ कड़ाई से पेश आता था।

बेन बॉस्टन के जन-जीवन के बारे में हंसी-मज़ाक भरे लेख लिखने लगा। फिर वह एक काल्पनिक विधवा स्त्री के नाम से लेख लिखने लगा। इन लेखों पर वह "साइलेंस डूगुड" (Silence Dogood) नाम से हस्ताक्षर करता, और रात में अपनी ही दुकान के दरवाज़े के नीचे से उन्हें खिसका देता। जेम्स को लगता कि वास्तव में इस नाम की कोई महिला है, जो यह लेख छपवाना चाहती है, और वह इन लेखों को प्रकाशित कर देता। हर कोई जानना चाहता था कि यह साइलेंस डूगुड आखिर है कौन। जब बेन ने यह ज़ाहिर किया कि वह खुद ही इन रचनाओं का लेखक है, लोग बड़े अचम्भित और प्रसन्न हुए। लेकिन जेम्स को यह बात बिलकुल अच्छी नहीं लगी, और वह बेन पर क्रोधित हुआ। कुछ समय बाद जेम्स कुछ और ही मुश्किलों में फँस गया। उसने शासन चलाने वाले अंग्रेज़ अफसरों के खिलाफ कई लेख छापे थे। इस कारण पहले उसे जेल जाना पड़ा, और फिर उसका काम भी बंद हो गया। उसके अख़बार छापने पर पाबन्दी लगा दी गयी। जेम्स ने सोचा कि क्यों न वह अपनी जगह बेन को अख़बार का प्रकाशक बना दे, और इस प्रकार अज्ञात रूप से अख़बार छापना चालू रखे। लेकिन बेन इसके लिए राज़ी नहीं था। दोनों भाइयों में इस बात को लेकर इतना झगड़ा हुआ, कि बेन घर छोड़ कर भाग गया।
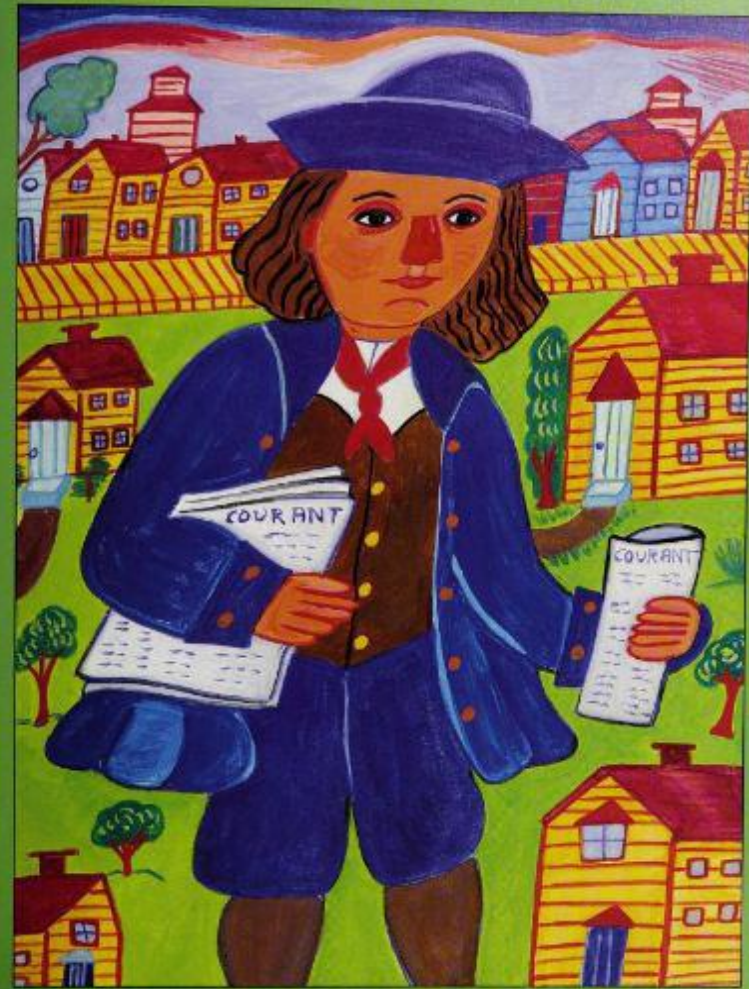
भाग कर बेन जब फ़िलेडैल्फ़िया पहुँचा तो वह फटे-हाल और भूखा-प्यासा था। उसने एक बेकरी से एक पेनी देकर तीन बन ख़रीदे। क्योंकि उसकी जेबें भरी हुई थीं, उसने दो बन अपनी बगलों में दबाये, और तीसरे को खाने लगा। भूख के मारे जब वह बन को जल्दी जल्दी मुँह में ठूंस रहा था, तो वहीं गलियारे में खड़ी एक लड़की उसे देख कर ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी। उस लड़की का नाम था डेबोराह रीड। बेन का उससे परिचय हो गया, और बेन ने उसी के घर में एक कमरा किराये पर ले लिया। उसे एक छापेखाने में नौकरी मिल गयी, और जल्दी ही मालिक ने काम-काज की सारी ज़िम्मेदारी उसे ही सौंप दी। फ़िलेडैल्फ़िया के गवर्नर भी बेन के काम से बहुत प्रभावित हुए, और उसे अपना खुद का कारोबार शुरू करने के लिए मदद की पेशकश की। उन्होंने सुझाया कि बेन इंग्लैंड जाकर छापेखाने की मशीन व अन्य ज़रूरी चीज़ें खरीद लाये, जिसका सारा खर्चा वह देंगे।

अठारह साल का बेन समुद्री यात्रा के विचार के बड़ा उत्साहित हुआ, और १७२४ में लंदन को चल पड़ा। लेकिन गवर्नर ने उससे झूठ बोला था। बेन को वह पैसा और परिचय पत्र मिले ही नहीं। घर से तीन हज़ार मील दूर पहुंचे बेन के पास खाने तक को पैसे नहीं थे। किसी तरह उसने लंदन के एक छापेखाने में नौकरी पाई, और घर लौटने लायक पैसा जमा होने तक वहीं रहा।

वापस लौटने पर बेन को छापेखाने की अपनी पुरानी नौकरी वापस मिल गई। लेकिन जल्दी ही बेन अपना खुद का व्यापार शुरू करने में कामयाब हो गया। सन १७२९ तक वह 'पेनसिलवेनिया गज़ट' नाम के अख़बार का प्रकाशक बन गया था। प्रकाशक होने के अलावा वह खुद ही अख़बार के संपादक और संवाददाता का काम भी करता था। अख़बार में चुटकुले, पहेलियाँ, और संपादक के नाम पत्र भी छपते थे। जब पत्र कम आते थे, तो बेन मनगढंत नामों से कुछ पत्र खुद ही लिख कर छाप देता था। उसका अख़बार शायद कार्टून छापने वाला अमेरिका का सबसे पहला अख़बार था, और यह कार्टून भी बेन खुद ही बनाता था।

बेन ने उसी लड़की, डेबोराह रीड, से शादी कर ली, जो उसे बगलों में बन दबाये देख कर खूब हंसी थी। और अब बेन एक बेटे का पिता भी बन चुका था। डेबोराह, जिसे बेन डेबी कह कर बुलाता था, छापाखाना और दुकान चलाने में बेन की मदद करती थी। उसकी दुकान में, जो उसने छापेखाने के करीब ही खोल ली थी, कलम, दावत, किताबें, मोमबत्ती, और लिखने-पढ़ने की अन्य बहुत सी चीज़ें मिलती थीं। बेन और डेबी के अब दो बच्चे थे, फ्रैंक और सैली। फ्रैंक जब चार साल का था तो उसे चेचक की बीमारी हो गई, और वह चल बसा। इस बात का दुःख बेन को लम्बे समय तक सताता रहा।
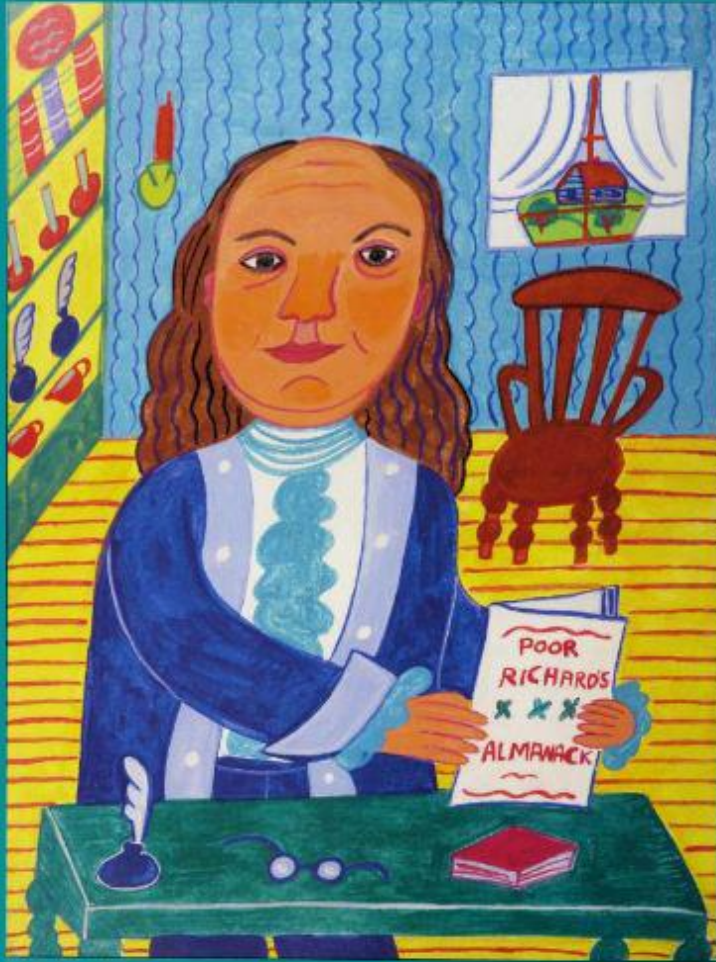
डेबी की सहायता से बेन को अपने व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त हुई। सन १७३२ में बेन ने "पुअर रिचर्ड्स अल्मनाक" का प्रकाशन शुरू किया। इस पुस्तक में छुट्टियों की तारीखें, मौसम की भविष्यवाणी, उत्सव व मेलों की जानकारी, न्यायालय खुलने की तारीखें, ज्वार-भाटे का समय, सूर्य-चंद्र ग्रहण व पूर्णिमा-अमावस्या की तिथियां, और ऐसी ही बहुत सी आम जनता के काम की जानकारियां शामिल थीं। बेन ने इसे रिचर्ड सौंडर्स उपनाम से लिखा, और इसमें अपने जीवन की कई छोटी छोटी बातें, हंसी-मजाक में दी गई सलाहें, और कई सूझ-बूझ से भरी उक्तियाँ भी डालीं, जैसे कि "अपना बकाया चुका दो, तो जान जाओगे कि तुम्हारी कीमत क्या है ", "जल्दी का काम शैतान का", और "एक पैसा बचाना यानि एक पैसा कमाना" इत्यादि। उसका यह प्रकाशन अप्रत्याशित रूप से लोकप्रिय हो गया, और बेन के ऊपर जैसे पैसे की बारिश होने लगी। वह बहुत धनी व्यक्ति बन गया। अब उसे छापाखाना चलाने की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए उसने यह काम अपने एक सहयोगी को सौंप दिया। बेन केवल ४२ वर्ष का था, और उसका मन-मस्तिष्क ऊर्जा से उफन रहा था।

बहुत समय से बेन चाहता था कि वह फ़िलेडैल्फ़िया के जन-जीवन में कुछ सुधार लाये। अपने पुस्तक प्रेम से प्रेरित होकर उसने १७३१ में देश के सबसे पहले जन-पुस्तकालय की शुरुआत की, जहाँ से कोई भी आम आदमी पुस्तकें उधार ले सकता था। १७३६ में सबसे पहले अग्नि-शमन विभाग की स्थापना भी उसने ही की, जिसमें ३० स्वयं-सेवी नौजवान काम करते थे। उसने शहर के प्रशासन को प्रेरित किया कि वे शहर की सड़कें पक्की बनाएं, उन पर रौशनी की व्यवस्था करें, और उनकी सफाई का भी इंतज़ाम करें। १७५१ में उसने फ़िलेडैल्फ़िया में ही देश के पहले जन-चिकित्सालय की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चार साल बाद बेन ने नौजवानों के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना करवाई, जो कि आगे चल कर पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय में परिणत हो गया। इसी प्रशिक्षण केंद्र के एक हिस्से में निर्धन बच्चों के लिए एक निःशुल्क विद्यालय भी बनाया गया था। पहले ही १७३७ में बेन को पोस्टमॉस्टर बना दिया गया था, और १७५३ में अँगरेज़ अफसरों ने उसे अमेरिका का सहायक पोस्टमॉस्टर जनरल नियुक्त कर दिया। इसके बाद बेन ने और अधिक डाकियों की भर्ती की, और डाक सेवा में बहुत से सुधार किये। उसके अपने शहर में ही नहीं, देश के अन्य बहुत से भागों में भी बेन के प्रयत्नों से लोगों के जीवन में बहु-आयामी परिवर्तन आये।

शुरू से ही बेन को विज्ञान से विशेष लगाव रहा था। जब १७५२ में उसने विलियम के साथ आकाशीय बिजली के बारे में अपनी चौंकाने वाली खोज की तो यह खबर तेज़ी से चारों ओर फैली। बेन की इस खोज से हर कोई बहुत उत्साहित था। लेकिन बेन के मन में सवाल था: "ऐसे दार्शनिक ज्ञान का क्या लाभ जिसका जीवन में कोई उपयोग न हो।" वह आकाश से गिरने वाली बिजली के खतरे को कम करना चाहता था, और इसके लिए उसके मन में एक विचार भी था। इमारतों के शिखर पर एक धातु का मोटा सरिया लगाया गया, जिससे एक मोटा विद्युतचालक तार भवन की दीवार के सहारे धरती तक आता था। जब आकाश से बिजली भवन पर गिरती, तो बिना कोई नुकसान किये बिजली उस तार से होकर धरती में प्रवेश कर जाती थी। इस प्रकार वह इमारत और उसमें रहने वाले लोग पूरी तरह सुरक्षित रहते।

पहले बेन ने ऐसा तड़ितचालक अपने घर पर लगाया। जल्दी ही अन्य बहुत सी इमारतों में भी ऐसे तड़ितचालकों का प्रयोग होने लगा। इनमें शामिल था मेरीलैंड राज्य के एनापोलिस शहर में स्थित राजकीय विधान भवन। बेन ने अपने इस अविष्कार को पेटेंट कराने या उससे मुनाफा कमाने से इनकार कर दिया। अपितु उसने तड़ितचालक बनाने सम्बन्धी सारी जानकारी प्रकाशित कर दी, जिससे कि कोई भी व्यक्ति उसे अपने घर में लगा सके।

बेन ने विज्ञान में अपनी रुचि का सदुपयोग बहुत से व्यावहारिक और जनोपयोगी कार्यों के लिए किया। उसने "फ्रैंक्लिन स्टोव" का भी अन्वेषण किया, जिसका काम था आतिशदान में जल रही आग की गर्मी को घर के ही अंदर सीमित रखना, बजाय इसके कि वह चिमनी के रास्ते बेकार ही बाहर चली जाय। उसने शहर की सडकों पर रौशनी करने के लिये एक नए प्रकार के लैंप का भी अविष्कार किया, जो पहले से ज़्यादा देर तक रौशनी करता था और ईंधन की खपत को भी कम करता था। जैसे बेन की उम्र बढ़ी, उसे दो-दो चश्मों की ज़रूरत पड़ने लगी, एक पढ़ने के लिये और दूसरा दूर देखने के लिये। तो उसने दोनों चश्मों के लेंस को आपस में जोड़ कर एक ही फ्रेम में जड़ लिया, और इस प्रकार बाइफोकल चश्मे का ईजाद किया। आज लाखों लोग ऐसे चश्मे पहनते हैं। वह वायलिन, हार्प और गिटार जैसे वाद्य तो बजाता ही था, उसने एक नए वाद्य "ग्लास आर्मोनिका" की भी ईजाद की, जो कि अलग-अलग नाप के कांच के प्यालों से बनाया गया था।

बेन को राजनीति में भी रुचि थी। १७३६ में उसे पेन्सिल्वेनिया विधान सभा के लेखाकार पद पर नियुक्त किया गया। पंद्रह वर्षों तक उसने विधान सभा में होने वाली सभी कार्यवाहियों का लेखा जोखा तैयार किया। विधान सभा में होने वाली तकरीरों को सुनते सुनते वह थक जाता था, लेकिन क्लर्क होने के नाते उनमें कोई भाग नहीं ले सकता था। इसलिए १७५१ में उसने विधान सभा की सदस्यता के लिए चुनाव लड़ा, और जीता भी।

तीन साल बाद १७५४ में फ्रेंच और ब्रिटिश लोगों के बीच युद्ध छिड़ गया। यह युद्ध उत्तरी अमेरिका पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए था। रेड इंडियन लोग फ्रांस की मदद कर रहे थे, और दूसरी ओर था ब्रिटेन, अमेरिका के अपने १३ औपनिवेशिक राज्यों के साथ। बेन ने इस युद्ध में एक ब्रिटिश कर्नल की भूमिका निभाई। विलियम ने भी उसकी मदद की। उन्होंने सैनिकों का नेतृत्व किया, किले बनाये, और सेना का संगठन किया। लेकिन युद्ध लड़ने के लिए उनके पास धन की कमी थी, अतः बेन और विलियम १७५७ में पैसे का इंतज़ाम करने इंग्लैंड गए। उनकी यात्रा काफी मुश्किल रही। वे बड़ी कठिनाई से फ्रेंच समुद्री लुटेरों के चंगुल से बच पाए। रास्ते में कई तूफ़ान भी आये, और वह किस्मतवाले थे कि उनका जहाज़ ध्वस्त होने से बच गया।

अंततः वे लंदन पहुंचे, जहाँ बेन ने पांच साल गुज़ारे और युद्ध के लिए पैसे का प्रबंध किया। इस दौरान विलियम कानून की पढाई करता रहा। अमेरिका के सर्वप्रमुख वैज्ञानिक और आविष्कारक होने के नाते बेन को वहां काफी मान-सम्मान प्राप्त हुआ। विलियम को किंग जॉर्ज तृतीय द्वारा न्यू-जर्सी राज्य के गवर्नर के पद पर नियुक्त कर दिया गया, और उसका विवाह भी हो गया। १७६२ में बेन फ़िलेडैल्फ़िया वापस आ गए, और कुछ समय बाद ही विलियम और उसकी पत्नी भी अमेरिका आ गए।

लेकिन वहां नई मुश्किलें जन्म ले रही थीं। पेन नामक ब्रिटिश परिवार, जिसने पेनसिलवेनिया राज्य की स्थापना की थी, अब भी वहां राज करता था। ये शासक चाहते थे कि वे सीधे इंग्लैंड के राजा के अंतर्गत उसके नाम से यह शासन चलाएं। इसे लागू करने के लिए १७६४ में बेन को फिर इंग्लैंड भेजा गया। उसे वहां पहुंचे कुछ ही समय हुआ था कि एक और गंभीर समस्या आ खड़ी हुई। इंग्लैंड ने फ्रैंच और रेड-इंडियन लोगों के खिलाफ जंग तो जीत ली थी, लेकिन अब वह क़र्ज़ के बोझ तले दबा हुआ था। इसलिए पैसा उगाहने के लिए १७६५ में इंग्लैंड ने स्टाम्प एक्ट के नाम से एक नया कानून पारित किया। इस कानून के अंतर्गत अमेरिकन लोगों पर अख़बार व कागज़ की बनी अन्य वस्तुओं पर नया टैक्स लगाया गया।

बेन इस टैक्स के खिलाफ तो था, पर बहुत अधिक नहीं। उसे पता नहीं था कि अमेरिका में लोग इस टैक्स से बहुत नाराज़ थे, और इसका घोर विरोध कर रहे थे। उन लोगों को लगा कि बेन ने उनके साथ विश्वासघात किया है, और उन्होंने फ़िलेडैल्फ़िया में बेन के घर को जला डालने की धमकी दी।

जब बेन को इस बात का पता चला तो वह तुरंत समझ गया कि अमेरिकन जनता कितने गुस्से में थी। उसने स्टाम्प एक्ट के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाई, अख़बारों को पत्र लिखे, इस बारे में भाषण दिए, और कानून बनाने वालों से इस पर बहस की। आखिरकार, मुख्यतः बेन के प्रयासों के कारण, यह कानून रद्द कर दिया गया। लेकिन बदले में ब्रिटिश सरकार ने चाय व अन्य कई वस्तुओं पर टैक्स लगा दिया। बेन ने हमेशा अमेरिका में रहने के बावजूद ब्रिटेन को अपना ही देश माना था। लेकिन अब उसका नज़रिया बदलने लगा था। इंग्लैंड के लोग अमेरिकी उपनिवेशों के निवासियों के प्रति समानता का भाव नहीं रखते थे। वे उन पर टैक्स तो लगाते थे परन्तु उन्हें मतदान का अधिकार नहीं देते थे।
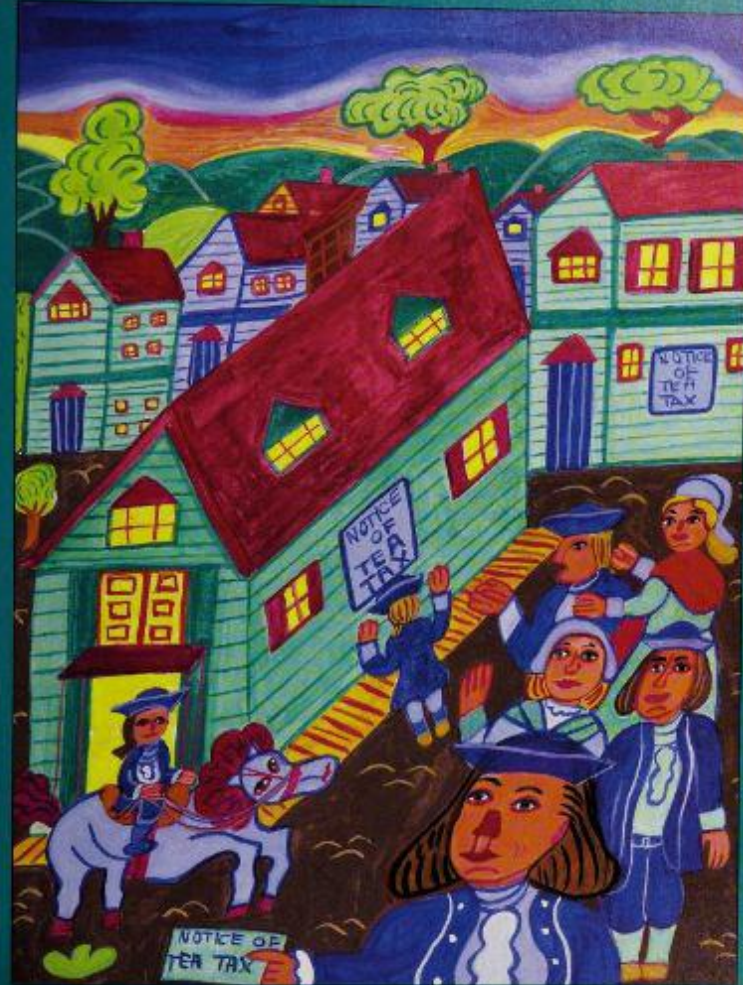
दिसम्बर १७७४ में विलियम ने अपने पिता को पत्र लिख कर सूचित किया कि डेबोराह फ्रैंकलिन का देहांत हो गया है। उस समय डेबोराह की उम्र ६४ वर्ष की थी। मार्च १७७५ में बेन घर को वापस चल पड़ा। उसका मन वहुत दुखी और निराश था। उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी, और इंग्लैंड आने के अपने उद्देश्य में वह विफल रहा था। १९ अप्रैल को बेन के वापस अमेरिका पहुँचने से पहले ही इंग्लैंड और उसके अमेरिकी उपनिवेशों के बीच युद्ध छिड़ गया।

बेन ५ मई १७७५ को फ़िलेडैल्फ़िया पहुंचा और अगले ही दिन उसने कॉन्टिनेंटल कांग्रेस में कार्यभार संभाल लिया।

यह कांग्रेस अमेरिकी नेताओं का एक समूह था जिसका मुख्य उद्देश्य इंग्लैंड से हो रहे युद्ध को जीतना था। बेन की उम्र ६९ वर्ष की हो चुकी थी लेकिन फिर भी वह रोज़ बारह घंटे काम करता था। पोस्टमॉस्टर के नाते उसकी ज़िम्मेदारी थी कि डाक जल्दी से जल्दी अपने गंतव्य तक पहुंचे। उसने कनाडा को, जिस पर इंग्लैंड का राज्य था, अमेरिका का साथ देने के लिए प्रेरित करने का प्रयत्न किया। लेकिन बेन को इस काम में सफलता नहीं मिली, और इस लम्बी और मुश्किल यात्रा में वह मरते-मरते बचा। किसी तरह वह फ़िलेडैल्फ़िया वापस पहुंचा, जहाँ कांग्रेस में यह बहस छिड़ी हुई थी कि क्या अब अमेरिका को इंग्लैंड से अपनी आज़ादी की घोषणा कर देनी चाहिए।

कुछ लोगों का मत था कि टैक्स के मुद्दों का समाधान हो जाये तो अमरीका पर इंग्लैंड शासन जारी रहने में कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन दूसरा मत यह था कि अब अमेरिका के स्वतंत्र राष्ट्र बनने का समय आ गया था। यदि स्वतंत्रता का निर्णय लिया गया तो अमेरिका को यह बताना होगा की वह इंग्लैंड से अलग क्यों होना चाहता है। जून १७७६ में कांग्रेस ने एक पांच सदस्यीय कमेटी को यह ज़िम्मेदारी दी कि वह अमेरिका का आज़ादीनामा (Declaration of Independence) लिख कर तैयार करे। बेंजामिन फ्रैंकलिन भी इस कमेटी के सदस्य थे। कांग्रेस ने इस मसले पर २ जुलाई १७७६ को मतदान कराया। बेन एक बहुत प्रभावशाली वक्ता थे। मतदान हुआ, और स्वतंत्रता के निर्णय की जीत हुई। दो दिन बाद कांग्रेस ने आज़ादीनामे पर अपने मुहर लगा दी, और तब से ४ जुलाई को अमेरिका के स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हालाँकि बेन बहुत खुश थे, लेकिन उन्हें इस बात का दुःख था कि विलियम ने इस पूरे प्रकरण में इंग्लैंड का साथ दिया था। विलियम को समझाने की उनकी सारी कोशिशें बेकार गईं। तब विलियम को जेल भेज दिया गया। बेन चाहते तो कांग्रेस से कह कर उसे छुड़ा सकते थे। लेकिन अमेरिका इस समय खतरे में था, और वह किसी व्यक्तिगत सहायता की मांग नहीं करना चाहते थे, यहाँ तक कि अपने बेटे के लिए भी नहीं।

युद्ध पूरे ज़ोर पर था। शुरू में ऐसा लग रहा था कि शायद इंग्लैंड विजयी होगा। फिर कांग्रेस ने बेन से कहा कि वह फ्रांस को अपने पक्ष में लाने का प्रयास करें। बेन अब काफी वृद्ध हो चुके थे। उनके लिए फ्रांस की यात्रा आसान न थी। लेकिन फिर भी वह गए। उनके जहाज़ को शीतकालीन समुद्री तूफानों का सामना करना पड़ा। ब्रिटेन के जासूसों का जाल भी चारों ओर फैला हुआ था। बेन अपने सन्देश अदृश्य स्याही से लिखते थे, और उन पर एक गोपनीय नाम से हस्ताक्षर करते थे।

इस बार बेन को सफलता प्राप्त हुई। फ्रांस ने अमेरिका का साथ देना स्वीकार किया, और अंततः १७८३ में अमेरिका युद्ध में विजयी हुआ। अमेरिका और ब्रिटेन के बीच शांति की संधि होने के बाद बेन घर वापस जाना चाहते थे, लेकिन कांग्रेस ने उनसे आग्रह किया कि वे फ्रांस में अमेरिका के राजदूत का पदभार संभालें। १७८५ तक वे फ्रांस में ही बने रहे, और फिर अमेरिका लौटे। युद्ध के दौरान ही विलियम को जेल से छोड़ दिया गया था, और वह इंग्लैंड में रहने लगा। अमेरिका आते समय बेन इंग्लैंड में भी रुके। विलियम उनसे मिलने गया, और उनसे समझौता करना चाहा, परन्तु बेन नहीं माने। ब्रिटेन का पक्ष लेने के विलियम के अपराध को वे क्षमा न कर सके।

फ़िलेडैल्फ़िया वापस लौटने पर बेन का भव्य स्वागत हुआ। कुछ समय बाद उन्हें पेन्सिलवानिया की शीर्ष कार्यकारी सभा का अध्यक्ष चुना गया। इक्यासी वर्ष की उम्र में उन्होंने अमेरिका का संविधान तैयार करने में भी अपना योगदान दिया। १७ सितम्बर १७८७ के दिन इस संविधान पर हस्ताक्षर किये गए। वही संविधान आज भी उस देश के शासन सम्बन्धी आदर्शों की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

इंग्लैंड से वापस लौटने के बाद से बेन अपनी पुत्री और नाती-पोतों के साथ रह रहे थे। उनका स्वास्थ्य अब ढलने लगा था। जब स्वास्थ्य कारणों से वह बिस्तरे तक सीमित रहते, तो अपने नाती-पोतों की बातें सुन कर अपना दिल बहलाते।
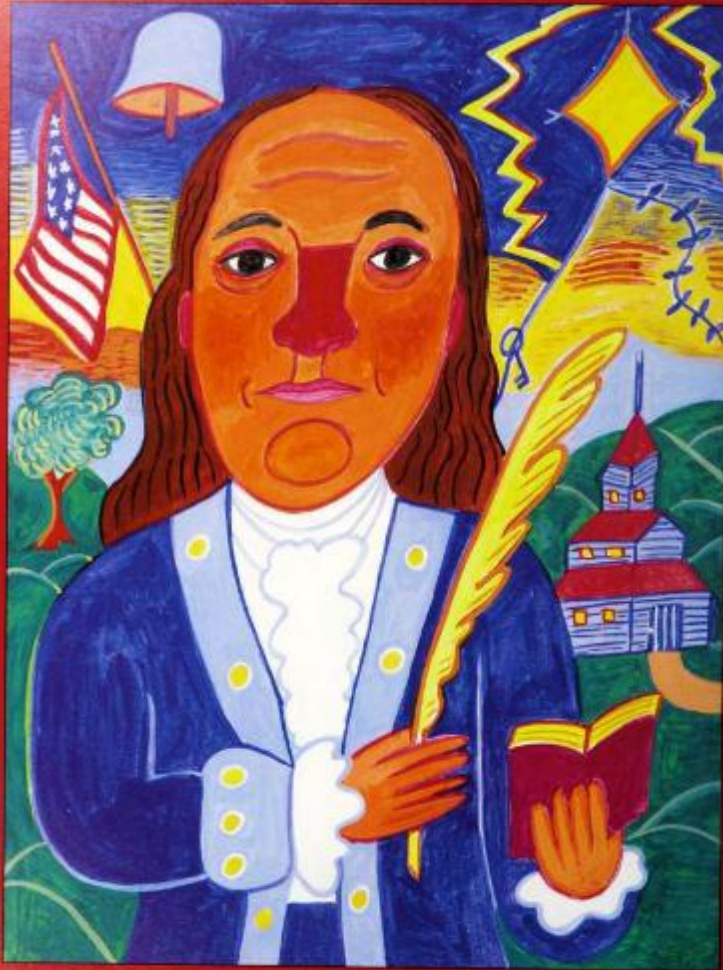
बेन के जीवन के अंतिम कार्यों में से एक था दासप्रथा के उन्मूलन के लिए उनका प्रयत्न। वह दास प्रथा उन्मूलन समिति के अध्यक्ष थे, और इस विषय पर अपने विचार लिखते रहते थे। उनके अंतिम सार्वजनिक कार्यों में एक था कांग्रेस को दास प्रथा की समाप्ति की पुरज़ोर सिफारिश करने वाला एक ज्ञापन सौंपना।

१७९० की वसंत ऋतु के समय बेन गंभीर रूप से बीमार हो गए , और १७ अप्रैल को उनका देहांत हो गया। मृत्यु के समय उनकी आयु ८४ वर्ष की थी। पूरे अमेरिका व अन्य देशों में भी उनके निधन का शोक मनाया गया। उनके अंतिम संस्कार में बीस हज़ार से भी अधिक लोगों ने भाग लिया। मृत्यु के बाद भी उनको अनेक प्रकार से श्रद्धांजलियां दी जाती रहीं। बहुत सी कवितायें, लेख और पुस्तकें लिखी गईं , और कई स्थानों पर उनकी प्रतिमाएं लगाई गईं। बहुत से अमेरिकी नगरों के संस्थानों और मार्गों पर उनका नाम अंकित है। सौ डॉलर के नोट पर उनका सौम्य और विद्वान चेहरा आज भी मुस्कुराता है। यद्यपि उनके संसार छोड़े एक लम्बा समय बीत चुका है, एक प्रकाशक, वैज्ञानिक, आविष्कारक, देशभक्त और राजनयिक के नाते समाज पर उनका अमिट प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है। जिस महान देश की स्थापना उनके योगदान से हुई, वह लगातार फल-फूल रहा है।

बेंजामिन फ्रैंकलिन के जीवन की समय-रेखा

१७०६ : बॉस्टन में मिल्क स्ट्रीट पर जन्म।

१७१८ : अपने भाई जेम्स के साथ आठ वर्ष लम्बे वेतन-रहित प्रशिक्षण की शुरुआत।

१७२२: साइलेंस डूगुड के नाम से हास्य-लेखों का प्रकाशन।

१७२३ : घर छोड़ कर भागना, पहले न्यू यॉर्क और फिर फ़िलेडैल्फ़िया पहुंचना, और अपनी भावी पत्नी डेबी रीड से मुलाकात।

१७२४ : पहली बार इंग्लैंड की समुद्री यात्रा।

१७२६ : फ़िलेडैल्फ़िया को वापसी।

१७२८ : फ़िलेडैल्फ़िया में छापे खाने की शुरुआत।

१७३० : डेबी से विवाह, और पहले पुत्र विलियम का जन्म।

१७३१ : अमेरिका की पहली पब्लिक लाइब्रेरी की शुरुआत।

१७३२ : पुअर रिचर्ड्स अल्मनाक का प्रकाशन। दुसरे बेटे फ्रैंकी का जन्म।

१७३६ : फ़िलेडैल्फ़िया के सर्व प्रथम स्वयंसेवी अग्निशमन दल का गठन। फ्रैंकी की चेचक से मृत्यु।

१७३७ : फ़िलेडैल्फ़िया के पोस्टमॉस्टर पद पर नियुक्ति।

१७४३ : पुत्री, सैली, का जन्म।

१७५१ : पेनसिलवेनिया विधान सभा के लिए निर्वाचित।

१७५२ : बादलों की बिजली को जांचने के लिए पतंग और चाभी वाला प्रयोग।

१७५२ : इंग्लैंड की दूसरी समुद्री यात्रा।

१७६२ : दो साल फ़िलेडैल्फ़िया रहने के बाद फिर इंग्लैंड की यात्रा।

१७६६ : स्टाम्प एक्ट की वापसी के लिए संघर्ष।

१७७१ : अपनी आत्मकथा के लेखन का प्रारम्भ।

१७७४ : पत्नी डेबी का निधन, फ़िलेडैल्फ़िया को वापसी, और कॉन्टिनेंटल कांग्रेस में नियुक्ति।

१७७६ : आज़ादीनामे को लिखने की ज़िम्मेदारी। अमेरिका के लिए समर्थन मांगने हेतु फ्रांस की यात्रा।

१७८३ : अमेरिका और इंग्लैंड के बीच शांति समझौते में योगदान।

१७८५ : अमेरिका वापस लौटने पर भव्य स्वागत।

१७८७ : इक्यासी वर्ष की अवस्था में अमेरिकी संविधान पर हस्ताक्षर करने वाले वृद्धतम व्यक्ति।

१७८९ : दासप्रथा उन्मूलन सभा के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति।

१७९० : १७ अप्रैल को निधन।

बेंजामिन फ्रेंकलिन के आविष्कार

बाइफोकल चश्मे : जिनका इस्तेमाल पास व दूर दोनों एक ही चश्मे से देखने के लिए होता है।

"बिजी-बॉडी" : कई दर्पणों से बनाई गई ऐसी व्यवस्था जिससे घर के ऊपरी तल पर बैठा व्यक्ति भी नीचे जाकर द्वार खोले बिना द्वार पर खड़े व्यक्ति को देख सके।

तीन सुइयों वाली घड़ी : जो कि घंटे और मिनट के अलावा सेकंड भी दर्शाती है। इससे पहले की घड़ियाँ केवल घंटे और मिनट ही दिखाती थीं।

एक्सटेंशन आर्म : लम्बी छड़ी से बनाया गया यंत्र जिससे ऊँचाई पर रखा सामान आसानी से उठाया जा सके।

फ्रैंकलिन स्टोव : गर्म हवा को कमरे में चारों ओर सामान रूप से फैलता है, और धुंए को चिमनी के रास्ते बाहर फ़ेंक देता है।

लाइब्रेरी चेयर : कुर्सी में नीचे छिपे हुए पायदान लगे होते हैं, जिन्हें खींच कर बाहर निकाला जा सकता है, और उन पर खड़े होकर ऊँचाई पर रखी किताबों तक पहुँचा जा सकता है।

तड़ितचालक (लाइटनिंग कंडक्टर) : आकाश से गिरने वाली बिजली को अपनी ओर खींचकर धरती में भेज देता है, और इमारतों व उनमें उपस्थित लोगों को सुरक्षित रखता है।

दूरचालित ताला : बिस्तरे में बैठे बैठे एक रस्सी को खींचकर घर के दरवाज़े में ताला डाला जा सकता है।

"पुअर रिचर्ड्स अल्मनाक " में बेन फ्रैंकलिन द्वारा लिखी सूक्तियां

मछलियां और मेहमान, दोनों में तीन दिन बाद दुर्गन्ध आने लगती है।

ईश्वर भी उनकी मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।

तीन लोग किसी राज़ को गोपनीय तभी रख सकते हैं जब उनमें से दो की मृत्यु हो जाये।

इंसानों और ख़रबूज़ों को परख पाना आसान नहीं।

उधार लेने वाला अपने लिए मुश्किलें ही मोल लेता है।

कुल्हाड़ी के छोटे छोटे प्रहारों से बड़े बड़े बरगद भी गिर जाते हैं।

खोया हुआ समय दोबारा वापस नहीं आता।

यदि आप प्रेम चाहते है, तो प्रेम करें, और अपने को प्रेम के काबिल बनायें ।

रोज़ाना एक सेब हकीम को दूर ही रखता है।

जो कुत्तों के साथ रहेगा, उसके मक्खियां तो चढ़ेंगी ही।

जो बोलते ज़्यादा हैं, वह ज़्यादातर करते बहुत कम हैं।

समय से सोना, और समय से जागना, यही राज़ है सेहत, दौलत और समझदारी का।

समझदारी के दरवाज़े कभी बंद नहीं होते।

बेंजामिन फ्रैंकलिन